

रविवार 13 जुलाई, 2025

विषय — धर्मविधि

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 14 : 31

"परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं॥" — मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: मत्ती 5 : 6, 8, 11, 12, 43-46, 48

- ⁶ धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।
- ⁸ धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
- ¹¹ धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।
- ¹² आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥
- ⁴³ तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।
- ⁴⁴ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो।
- ⁴⁵ जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेह बरसाता है।
- ⁴⁶ क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते?
- ⁴⁸ इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मत्ती 26 : 6-8 (से 2nd), 10, 12, 13, 20-29, 32, 36, 38-40, 42, 43 (से :), 44, 45, 46 (देखो), 47, 49, 50

- ⁶ जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था।
- ⁷ तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 8 यह देखकर, उसके चेले रिसयाए।
- 10 यह जानकर यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है।
- 12 उस ने मेरी देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाढ़े जाने के लिये किया है
- 13 मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।
- 20 जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा।
- 21 जब वे खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।
- 22 इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरु, क्या वह मैं हूं?
- 23 उस ने उत्तर दिया, कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।
- 24 मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता।
- 25 तब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने कहा कि हे रब्बी, क्या वह मैं हूं?
- 26 उस ने उस से कहा, तू कह चुका: जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांग कर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है।
- 27 फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ।
- 28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।
- 29 मैं तुम से कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं॥
- 32 परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा।
- 36 तब यीशु ने अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं।
- 38 तब उस ने उन से कहा; मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
- 39 फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।
- 40 फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?
- 42 फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की; कि हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।
- 43 तब उस ने आकर उन्हें फिर सोते पाया।
- 44 और उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की।
- 45 तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा; अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।
- 46 ... देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है॥
- 47 वह यह कह ही रहा था, कि देखो यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए आई।

- 49 और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा; हे रब्बी नमस्कार; और उस को बहुत चूमा।
50 यीशु ने उस से कहा; हे मित्र, जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले। तब उन्होंने पास आकर यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड़ लिया।

2. यूहन्ना 19 : 16 (और), 17, 18 (से), 41 (से), 42 (से यीशु)

- 16 तब वे यीशु को ले गए।
17 और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।
18 जहां उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया।
41 जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी।
42 उन्होंने यीशु को उसी में रखा... ॥

3. मत्ती 28 : 1-3, 5, 6 (से 1st), 7 (से 1st ;), 8, 9 (से 1st), 10

- 1 सब्ब के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई।
2 और देखो एक बड़ा भुईडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।
3 उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाई उज्ज्वल था।
5 स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूँढ़ती हो।
6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है।
7 और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है।
8 और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गई।
9 और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा; सलाम।
10 तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाईयों से जाकर कहो, कि गलील को चलें जाएं वहाँ मुझे देखेंगे॥

4. यूहन्ना 21 : 1, 4 (कब), 6, 7 (से 1st), 8 (से ;), 9, 12-14, 25

- 1 इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया।
4 भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है।
6 उस ने उन से कहा, नाव की दाहनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके।
7 इसलिये उस चले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा, यह तो प्रभु है: शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा।

- 8 परन्तु और चले डोंगी पर मछिलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे।
- 9 जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोएले की आग, और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी।
- 12 यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन करो और चेलों में से किसी को हियाव न हुआ, कि उस से पूछे, कि तू कौन है? क्योंकि वे जानते थे, कि हो न हो यह प्रभु ही है।
- 13 यीशु आया, और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी।
- 14 यह तीसरी बार है, कि यीशु ने मरे हुआओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए॥
- 25 और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 26 : 21-23

यीशु के शिक्षण और सत्य के अभ्यास में ऐसा बलिदान शामिल है जो हमें अपने सिद्धांत को प्रेम के रूप में स्वीकार करता है।

2. 117 : 16-23

अपने आप में जीवन और सत्य का चित्रण और प्रदर्शन करते हुए और बीमारों और पापियों पर अपनी शक्ति के द्वारा, एक दिव्य छात्र के रूप में, उन्होंने ईश्वर को मनुष्य के सामने प्रकट किया। यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों (अजीब कार्यों) और विशेष रूप से उनके शक्तिशाली, मुकुटधारी, अद्वितीय और विजयी शरीर से बाहर निकलने में शामिल दैवीय सिद्धांत की व्याख्या करने के लिए मानव सिद्धांत अपर्याप्त हैं।

3. 314 : 10-12, 19-22

यहूदियों ने, जो परमेश्वर के इस जन को मारना चाहते थे, यह स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि उनके भौतिक दृष्टिकोण ही उनके दुष्ट कार्यों के जनक थे। ... इस भौतिकवाद ने सच्चे यीशु को नज़रअंदाज़ कर दिया; लेकिन वफ़ादार मरियम ने उसे देखा, और उसने पहले से कहीं ज़्यादा उसके सामने जीवन और तत्व का सच्चा विचार प्रस्तुत किया।

4. 47 : 10 (यहूदा)-26

यहूदा ने यीशु के खिलाफ साजिश रची। उस धर्मी व्यक्ति के प्रति दुनिया की अकर्मण्यता और घृणा ने उसके विश्वासघात को प्रभावित किया। गद्दार की कीमत चांदी के तीस सिक्के और फरीसियों की मुस्कान थी। उसने अपना समय तब चुना, जब लोग यीशु की शिक्षाओं के विषय में संदेह में थे।

वह समय निकट आ रहा था जो यहूदा और उसके गुरु के बीच की असीम दूरी को उजागर करेगा। यहूदा इस्करियोती यह जानता था। वह जानता था कि उस प्रभु की महान भलाई ने यीशु और उसके विश्वासघाती के बीच एक खाई पैदा कर दी थी, और इस आध्यात्मिक दूरी ने यहूदा की ईर्ष्या को और बढ़ा दिया था। सोने के लालच ने उसकी कृतघ्नता को और मजबूत कर दिया, तथा कुछ समय के लिए उसका पश्चाताप शांत हो गया। वह जानता था कि संसार को सत्य की अपेक्षा झूठ अधिक प्रिय है; इसलिए उसने लोकप्रिय दृष्टि से स्वयं को ऊंचा उठाने के लिए यीशु के साथ विश्वासघात की योजना बनायी। उसकी काली साजिश धराशायी हो गई और उसके साथ गद्दार भी ढेर हो गया।

5. 32 : 3-14

प्राचीन रोम में एक सैनिक को अपने जनरल के प्रति निष्ठा की शपथ लेने की आवश्यकता थी। इस शपथ के लिए लैटिन शब्द संस्कार था, और हमारे अंग्रेजी शब्द संस्कार से लिया गया है। यहूदियों में यह एक प्राचीन रीति-रिवाज था जिसमें प्रत्येक अतिथि को एक कप शराब दी जाती थी। लेकिन यूचरिस्ट एक रोमन सैनिक की शपथ को याद नहीं करता है, न ही शराब, आदी अवसरों पर और हमारे भगवान के कप यहूदी संस्कारों में इस्तेमाल किया गया था। कप उनके कड़वे अनुभव को दर्शाता है, - जिस कप से उन्होंने प्रार्थना की थी वह उनसे गुजर सकता है, हालांकि वह दिव्य डिक्री को पवित्र रूप से प्रस्तुत करते हैं।

6. 586 : 23-25

गेथसेमेन: धैर्यपूर्ण दुःख; मानव का ईश्वर के प्रति समर्पण; प्रेम को कोई प्रतिक्रिया नहीं, फिर भी प्रेम ही बना रहा।

7. 47 : 31-9

बगीचे में अपनी निराशा और महिमा की रात के दौरान, यीशु ने किसी भी संभावित भौतिक बुद्धि में विश्वास करने की पूरी त्रुटि को महसूस किया। उपेक्षा की वेदना और धर्मांध अज्ञानता की लाठियों ने उसे बुरी तरह सताया। उनके छात्र सो गए। उसने उनसे कहा: "क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?"

क्या वे उसके साथ देखभाल नहीं कर सकते थे, जो प्रतीक्षा कर रहा था और आवाजहीन पीड़ा में संघर्ष कर रहा था, एक दुनिया पर बिना किसी शिकायत के पहरा दे रहा था? उस मानवीय लालसा का कोई जवाब नहीं था, और इसलिए यीशु हमेशा के लिए पृथ्वी से स्वर्ग की ओर, भावना से आत्मा की ओर मुड़ गए।

8. 39 : 1-9

हमारे स्वामी ने अपनी अपरिचित भव्यता का उपहास सहते हुए विनम्रतापूर्वक सामना किया। उन्हें जो अपमान सहना पड़ा, उसे उनके अनुयायियों को ईसाई धर्म की अंतिम विजय तक सहना पड़ेगा। उन्होंने शाश्वत सम्मान जीता। उन्होंने संसार, शरीर और समस्त त्रुटि पर विजय प्राप्त की, तथा इस प्रकार उनकी शून्यता को सिद्ध किया। उसने पाप, बीमारी और मृत्यु से पूर्ण उद्धार दिलाया। हमें "मसीह और क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह" की आवश्यकता है। हमें परीक्षणों और आत्म-त्याग के साथ-साथ खुशियों और जीत का भी सामना करना होगा, जब तक कि सभी त्रुटियाँ नष्ट न हो जाएं।

9. 32 : 28-10

फसह, जो यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले रात को निसान के महीने में अपने शिष्यों के साथ खाया था, एक दुखद अवसर था, दिन के अंत में लिया गया एक उदास भोजन, छाया के साथ एक शानदार कैरियर के धुंधलेपन में तेजी से गिर रहा था; और इस भोजन ने हमेशा के लिए यीशु के कर्मकांड या रियायतों को समाप्त कर दिया।

उनके अनुयायियों, दुखी और चुपचाप, अपने मास्टर के दर्द के समय का अनुमान लगाते हुए, स्वर्गीय मन्ना में शामिल हो गए, जिसने अतीत में सत्य के सताए हुए अनुयायियों को जंगल में खिलाया था। उनकी रोटी वास्तव में स्वर्ग से नीचे आई थी। यह आध्यात्मिक का महान सत्य था, बीमारों को ठीक करना और त्रुटि को दूर करना। उनके मास्टर ने पहले यह सब समझाया था, और अब यह रोटी उन्हें खिला रही थी और उन्हें बनाए रख रही थी।

10. 33 : 13-26

आध्यात्मिक होने के इस सत्य के लिए, उनके स्वामी हिंसा को पीड़ित करने वाले थे और उनके दुःख के प्याले को सूखा। उसे उन्हें छोड़ना होगा। उस पर विजय प्राप्त करने की महान महिमा के साथ, उन्होंने धन्यवाद दिया और कहा, "तुम सब इससे पी लो।"

जब उसमें मानवीय तत्व परमात्मा से संघर्ष करता है, तो हमारे महान शिक्षक ने कहा: "मेरी नहीं लेकिन तेरी ही इच्छा पूरी हो।" — अर्थात्, मांस को नहीं, परन्तु आत्मा को मुझमें दर्शाया जाए यह आध्यात्मिक प्रेम की नई समझ है। यह मसीह, या सत्य के लिए सभी देता है। यह अपने दुश्मनों को आशीर्वाद देता है, बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को मिटाता है, अतिचारों और पापों से मृतकों को उठाता है, और हृदय में नम्र गरीबों को सुसमाचार सुनाता है।

11. 34 : 18-18 अगला पृष्ठ

अनुभवी सभी शिष्यों के माध्यम से, वे अधिक आध्यात्मिक हो गए और बेहतर समझा कि मास्टर ने क्या सिखाया था। उनका पुनरुत्थान भी उनका पुनरुत्थान था। इससे उन्हें खुद को और दूसरों को आध्यात्मिक नीरसता से दूर रखने और ईश्वर में असीम संभावनाओं की धारणा में अंधे होने में मदद मिली। उन्हें इस जल्दी की आवश्यकता थी, जल्द ही उनके प्रिय मास्टर वास्तविकता के आध्यात्मिक क्षेत्र में फिर से उठेंगे, और उनकी आशंका से बहुत ऊपर उठेंगे। अपने विश्वासयोग्य के लिए पुरस्कार के रूप में, वह उस परिवर्तन में भौतिक अर्थों के लिए गायब हो जाएगा जिसे तब से उदगम कहा जाता है।

गैलिलियन सागर के तट पर हर्षित बैठक में हमारे प्रभु के अंतिम भक्त और उनके अंतिम आध्यात्मिक नाशते के बीच उनके शिष्यों के साथ उज्ज्वल सुबह के घंटों में क्या विपरीत है! उसकी उदासी महिमा में पारित हो गई थी, और उसके शिष्यों के पश्चाताप में दुः ख, - दिलों का पीछा किया और गर्व ने डांटा। अंधेरे में अपने शौचालय के फलहीनता के प्रति आश्चस्त और अपने मास्टर की आवाज से जागृत, उन्होंने अपने तरीकों को बदल दिया, भौतिक चीजों से दूर हो गए, और दाईं ओर अपना जाल डाला। समय के किनारे पर मसीह, सत्य, नए सिरे से, वे नश्वर कामुकता से कुछ हद तक उठने में सक्षम थे, या मन में दफन आत्मा के रूप में जीवन के नएपन में।

एक नए प्रकाश की सुबह में हमारे भगवान के साथ यह आध्यात्मिक बैठक सुबह का भोजन है जिसे ईसाई वैज्ञानिक स्मरण करते हैं। वे मसीह, सत्य के सामने झुकते हैं, अपने पुनः प्रकट होने और चुपचाप दिव्य सिद्धांत, प्रेम के साथ कम्यून प्राप्त करने के लिए। वे मृत्यु पर अपने भगवान की जीत का जश्न मनाते हैं, मृत्यु के बाद मांस में उसका परिवीक्षा, मानव परिवीक्षा का अनुकरण, और पदार्थ से ऊपर उसका आध्यात्मिक और अंतिम तप, या जब वह भौतिक दृष्टि से बाहर उठता है।

12. 35 : 25-29

हमारा ईश्वरवादी एक ईश्वर के साथ आध्यात्मिक संवाद है। हमारी रोटी, "जो स्वर्ग से नीचे आती है," सत्य है। हमारा प्याला पार है। हमारी शराब प्रेम की प्रेरणा थी, हमारे मास्टर ने मसौदा तैयार किया और अपने अनुयायियों की प्रशंसा की।

13. 497 : 24 (और)-27

और हम सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उस मन को देखने, और प्रार्थना करने के लिए हम में रहें जो मसीह यीशु में भी था; दूसरों के साथ वैसा ही करें जैसा हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ करें; और दयालु, न्यायी, और शुद्ध होना।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6